मधुबन ओम् शान्ति अंक 276 जुलाई 2015

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(15-06-15)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, मेहनत को मोहब्बत में बदलने वाले, सदा दिलखुश से जहान को खुश करने वाले, निरन्तर और स्वत: योगी, सहज राजयोगी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - ड्रामा अनुसार एक मास अमेरिका और लण्डन का चक्र लगाते, अनेकानेक भाई बहिनों से मिलन मनाते मैं आराम से अपने मधुबन घर में पहुंच गई। मधुबन बेहद घर में तो दुनिया भर के लोग आते हैं। दुनिया भर में ऐसा स्थान कहाँ भी नहीं देखा। मीठे बाबा ने जो पाण्डव भवन में पढ़ाया है, जो तपस्या की है, उसके वायब्रेशन अभी भी हैं। चारों धामों की यात्रा करते तपस्या द्वारा विश्व में शान्ति फैलाने की सेवा हो रही है। इस समय बहुत अच्छी योग भट्ठियां भी चल रही हैं। मीठे बाबा ने हम बच्चों को कितना सहज योग सिखाया है। योग में बैठते परमात्मा बाप के सिवाए और कोई बात याद नहीं आती। कल क्या हुआ था, वह भी याद नहीं। 80 साल हुए, यही अभ्यास शुरू से किया है कि मैं हूँ आत्मा, देह से न्यारी। मैं देह नहीं हूँ, देह को चलाने वाली चैतन्य शक्ति हूँ। देह, देह के संबंधी यहाँ हैं, मैं वहाँ (ऊपर में) हूँ क्योंकि हमारा बाबा ऊपर रहता है। मेरा घर भी वहाँ ही है। जब अपना बुद्धियोग ऊपर लगाते हैं तो नीचे से न्यारे और बाबा के प्यारे बन जाते हैं। सहज योग के लिए सिर्फ मन को शान्त रखो, बुद्धि को शुद्ध बनाओ, योगी माना शान्ति, प्रेम, खुशी, शक्ति.. सब गुण समाये हुए हैं। तो योग में परमात्मा पिता के संबंध से लाइट रहते हैं। लाइट एक रोशनी है, दूसरा हल्कापन है। तो आत्मा समझने से डबल लाइट बन जाते हैं। फिर अन्तर्मुखी बनने से एकाग्रता की शक्ति आ जाती है, मन बुद्धि शान्त हो जाती है तो सच्चाई अन्दर से काम करती है। मैंने अपनी लाइफ में देखा है सच्चाई ने बहुत काम किया है। हम कहते हैं ड्रामा बहुत मीठा है, यहाँ है भगवान, यहाँ है भाग्य, हम अच्छे से अच्छा पार्ट प्ले करते चलें। ज्ञान से कर्म और संबंध में श्रेष्ठता आ गई। अब साधारण कर्म अच्छा नहीं लगता। कहते हैं कर्म बड़े बलवान है और परमात्मा सर्वशक्तिवान है। उनकी याद में, उनका बच्चा अपने को समझने से, स्टूडेन्ट बन करके अच्छी पढ़ाई करने से कमाई कितनी है। बाबा और ड्रामा के सिवाए मन में और कुछ आता ही नहीं है। ध्यान ईश्वर में है और ज्ञान कहता है सभी मेरे मित्र हैं। बाबा मेरा मित्र, मैं अपना मित्र, यह सब मेरे मित्र हैं। मित्रता भाव से कर्म अच्छे हो जाते हैं। फिर तपस्या से सेवायें अपने आप हो रही हैं, सारे विश्व में वायब्रेशन जा रहे हैं।

बोलो, मीठे भाई बहिनें, ऐसा ही अनुभव होता है ना। बाकी यह तो मीठी मम्मा का मास चल रहा है, मम्मा कैसे एक बल एक भरोसे के आधार से एकव्रता बन सम्पन्न और सम्पूर्ण बन गई। सभी मम्मा के जीवन चरित्र तो जानते ही हो। उनके समान गम्भीरता की मूर्ति बनना है। हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ, अपने समय संकल्प श्वांस को सफल करना है। अच्छा - अभी तो आप सब शान्तिवन की भट्ठियों में नम्बरवार आते रहेंगे। सबसे मिलते रहेंगे। सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष (जुलाई 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) त्याग वृत्ति द्वारा तपस्वी-मूर्त बनो

1) तपस्या अर्थात् एक बाप की लगन में रहना। किसी भी कार्य में सफलता मूर्त बनने के लिये त्याग और तपस्या चाहिए। त्याग में महिमा का भी त्याग, मान का भी त्याग और प्रकृति दासी का भी त्याग – जब ऐसा त्याग हो तब तपस्या द्वारा सफलता स्वरूप बनेंगे।

2) अब अपने ईश्वरीय ब्राह्मणपन के, सर्वस्व त्यागी की पोज़ीशन में स्थित रहो। हद की पोज़ीशन कि मैं सबसे ज्यादा सर्विसएबुल हूँ, प्लैनिंग बुद्धि हूँ, इनवेन्टर हूँ, धन का सहयोगी हूँ, दिन-रात तन लगाने वाला हार्ड-वर्कर हूँ या इन्चार्ज हूँ... इस प्रकार के हद के नाम, मान और शान के उल्टे पोज़ीशन को छोड़ अब त्यागी और तपस्वीमूर्त बनो।

3) तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में लवलीन, प्रेम के सागर में समाए हुए, ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति के सागर में समाये हुए को ही कहेंगे तपस्वी। ऐसे त्याग, तपस्या वाले ही सेवाधारी कहे जाते हैं।

4) वह आत्म-ज्ञानी भी जिस्मानी, अल्पकाल की तपस्या से अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं। आप रूहानी तपस्वी परमात्म ज्ञानी हो, तो आपका संकल्प आपको विजयी रत्न बना देगा। अनेक प्रकार के विघ्न ऐसे समाप्त हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। माया के विघ्नों का नाम-निशान भी नहीं रहेगा।

5) तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन, चलते-फिरते भोजन करते भी लगन लगी रहे। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना - यह भी तपस्या हुई।

6) जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कारों में बेहद का त्याग और बेहद की तपस्या देखी। हर संकल्प में यही रहा कि बेहद का कल्याण कैसे हो। ऐसे बेहद के तपस्वी बनो। दो चार घण्टे के तपस्वी नहीं लेकिन हर सेकेण्ड तपस्या स्वरूप, तपस्वी मूर्त। मूर्त और सूरत से त्याग, तपस्या और सेवा – साकार रूप में प्रत्यक्ष करो।

7) हरेक यही संकल्प लो कि हमें शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं, तपस्वी मूर्त बनकर रहना है, अब एक दूसरे को वाणी से सावधान करने का समय नहीं है, अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

8) जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है। वैसे आपकी तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही आकर्षण करे। हर कर्म में त्याग और तपस्या प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।

9) जो निरन्तर तपस्वी हैं उनके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई नहीं देगा। किसी भी संस्कार वा स्वभाव वाली आत्मा, उनके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना ही रहेगी। दूसरी भावनायें उत्पन्न नहीं हो सकती।

10) जैसे वह तपस्वी सदैव आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप अपनी एकरस आत्मा की स्थिति के आसन पर विराजमान रहो। इस आसन को नहीं छोड़ो तब सिंहासन मिलेगा। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमानी की तपस्या प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

11) ब्रह्मा की स्थापना का कार्य तो चल ही रहा है। ईश्वरीय पालना का कर्त्तव्य भी चल ही रहा है। अब लास्ट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मों और हर आत्मा के तमोगुणी संस्कारों और प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने का कर्त्तव्य करना है। जैसे चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित होकर अब अपना तपस्वी रूप प्रत्यक्ष दिखाओ।

12) जब तपस्वी तपस्या करते हैं तो वृक्ष के नीचे तपस्या करते हैं। इसका भी बेहद का रहस्य है, इस सृष्टि रूपी वृक्ष में आप लोग भी नीचे जड़ में बैठकर तपस्या कर रहे हो। वृक्ष के नीचे बैठने से सारे वृक्ष की नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। यह जो आपकी स्टेज है, उसका यादगार भक्तिमार्ग में चलता आया है। यह है प्रैक्टिकल, भक्ति मार्ग में फिर स्थूल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते हैं।

13) जैसे पहले-पहले नशा रहता था कि हम इस वृक्ष के ऊपर बैठकर सारे वृक्ष को देख रहे हैं, ऐसे अभी भी भिन्न-

भिन्न प्रकार की सेवा करते हुए तपस्या का बल अपने में भरते रहो। जिससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड और एक साथ रहें।

14) देह-अभिमान को छोड़ना - यह बड़े ते बड़ा त्याग है। इसके लिए हर सेकेण्ड अपने आपको चेक करना पड़ता है। इस त्याग से ही तपस्वी बनेंगे और एक बाप से ही सर्व सम्बन्धों का अनुभव करेंगे।

15) समय की समीपता के प्रमाण अभी सच्चे तपस्वी बनो। आपकी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या द्वारा शुरू करो।

B) साधना के आधार से साधनों को कार्य में लगाओ

1) विनाशी साधनों के आधार पर आपकी अविनाशी साधना नहीं हो सकती। साधन निमित्त मात्र हैं और साधना निर्माण का आधार है इसलिए अब साधना को महत्व दो। साधना ही सिद्धि को प्राप्त करायेगी।

2) सर्व प्राप्ति, सर्व साधन होते हुए भी साधनों में नहीं आओ, साधना में रहो। साधन होते हुए भी त्याग वृत्ति में रहो तब थोड़े समय में अनेक आत्माओं का भाग्य बना सकेंगे।

3) यह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दु:खी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें।

4) किसी भी स्थान के वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाने के लिए अपने अव्यक्त स्वरूप की साधना चाहिए, इसका बार-बार अटेन्शन रहे। जिस बात की साधना की जाती है, उसी बात का ध्यान रहता है। अगर एक टाँग पर खड़े होने की साधना है तो बार-बार वही अटेन्शन रहेगा। तो यह साधना अर्थात् बार-बार अटेन्शन की तपस्या।

5) आप सभी अपने को बहुत बिज़ी समझते हो लेकिन अभी फिर भी बहुत फ्री हो। आगे चल और बिज़ी होते जायेंगे इसलिए स्व प्रति जितना भी समय मिले स्व-अभ्यास, स्व-साधना में सफल करते जाओ।

6) जैसे विशेष दिनों पर भक्त लोग व्रत रखते हैं, साधना करते हैं। एकाग्रता का विशेष अटेन्शन रखते हैं। ऐसे सेवाधारी बच्चों को भी यह वायब्रेशन आने चाहिए। सहज योग की साधना, साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति के ऊपर विजयी हो। ऐसा न हो इसके बिना तो रह नहीं सकते, यह साधन नहीं मिला इसलिए स्थिति डगमग हो गई... इसको भी न्यारी जीवन नहीं कहेंगे।

7) समय प्रति समय वैभवों के साधनों की प्राप्ति बढ़ती जा रही है। आराम के सब साधन बढ़ते जा रहे हैं। लेकिन यह प्राप्तियां बाप के बनने का फल मिल रहा है। तो फल को खाते बीज को नहीं भूल जाना। आराम में आते राम को नहीं भूल जाना। सच्ची सीता रहना। मर्यादा की लकीर से संकल्प रूपी अंगूठा भी नहीं निकालना क्योंकि यह साधन बिना साधना के यूज़ करेंगे तो स्वर्ण-हिरण का काम कर लेगा।

8) एक बाप दूसरा न कोई - यही आपकी अखण्ड-अटल साधना है। यह अखण्ड-अटल साधना वहाँ अखण्ड राज्य का अधिकारी बना देती है। यहाँ का छोटा-सा संसार बापदादा, मात-पिता और बहन-भाई, वहाँ के छोटे संसार का आधार बनता है।

9) साधनों को आधार नहीं बनाओ लेकिन साधना के आधार से साधनों को कार्य में लगाओ। यदि साधना की स्थिति में रह साधनों को कार्य में नहीं लगाते, कोई-न-कोई आधार को अपनी उन्नति का आधार बना देते हो तो जब वह आधार हिलता है, तो उमंग-उत्साह भी हिल जाता है। वैसे आधार लेना कोई बुरी चीज़ नहीं है लेकिन आधार को फाउण्डेशन नहीं बनाओ।

10) साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। सिर्फ योग में बैठ जाना यही साधना नहीं है लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन और बुद्धि चारों ही एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ समान स्थिति में बैठ जाएं – तब कहेंगे यथार्थ साधना।

11) साधना वाले का आधार सदा बाप ही होता है और जहाँ बाप है वहाँ सदा बच्चों की उड़ती कला है। जो साधना द्वारा बाप के साथ हैं, उनके लिए संगमयुग पर सब नया ही नया अनुभव होता है। हर घड़ी में, हर संकल्प में नवीनता क्योंकि हर कदम में उड़ती कला अर्थात् प्राप्ति में प्राप्ति होती रहेगी।

12) बापदादा जानते हैं कि पुराने शरीर हैं तो पुराने शरीरों को साधन चाहिये। लेकिन ऐसा अभ्यास जरूर करो कि कोई भी समय साधन नहीं हो तो साधना में विघ्न नहीं पड़ना चाहिये। जो मिला वो अच्छा। अगर कुर्सी मिली तो भी अच्छा, धरनी

मिली तो भी अच्छा। जैसे आदि सेवा के समय साधन नहीं थे, लेकिन साधना कितनी श्रेष्ठ रही। तो यह साधना है बीज, साधन है विस्तार। तो साधना का बीज छिपने नहीं दो, अभी फिर से बीज को प्रत्यक्ष करो।

13) वर्तमान समय के प्रमाण अभी अपनी सेवा वा सेवास्थानों की दिनचर्या बेहद के वैराग्य वृत्ति की बनाओ। अभी आराम की दिनचर्या मिक्स हो गई है। अलबेलापन शरीर की छोटी-छोटी बीमारियों के भी बहाने बनाता है। अगर किसी पदार्थ की, साधनों की आकर्षण है तो साधना खण्डित हो जाती है।

14) वर्तमान समय अनेक साधनों को देखते हुए साधना को भूल नहीं जाना क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है। आज मन की खुशी के लिए मनोरंजन के कितने नये-नये साधन बनाते हैं। वह है अल्पकाल के साधन और आपकी है सदाकाल की सच्ची साधना। तो साधना द्वारा सर्व आत्माओं का परिवर्तन करो। हाय-हाय लेकर आयें और वाह-वाह लेकर जायें।

15) अभी चारों ओर साधना का वायुमण्डल बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानी बना लो, एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर लो, इसको कहा जाता है - साधना।

16) याद को शक्तिशाली बनाने के लिए विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो। साधना अर्थात् शक्तिशाली याद। निरन्तर बाप के साथ दिल का सम्बन्ध। साधना इसको नहीं कहते कि सिर्फ योग में बैठ गये लेकिन जैसे शरीर से बैठते हो वैसे दिल, मन, बुद्धि एक बाप की तरफ बाप के साथ-साथ बैठ जाए। ऐसी एकाग्रता ही ज्वाला को प्रज्जवलित करेगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 8-4-13 *मधुबन*

"समर्पण माना - पढ़ाई में रेग्युलर, धारणा में नम्बरवन, कोई भी बात को मेरा नहीं समझे"

(दादी जानकी)

शिवबाबा ने अपना काम करने के लिए ब्रह्मा बाबा से देह सहित देह के सब सम्बन्ध, सब बातें फिनिश कराके अपना बना लिया। शिवबाबा ने सेकेण्ड में ब्रह्माबाबा में प्रवेश किया, उसी घड़ी बाबा की दृष्टि बदल गयी। लाइट लाइट दिखाई पड़ी, माइट मिली। आज दिन तक अव्यक्त हो करके भी यही काम कर रहा है। शिवबाबा तो जन्म-मरण में आता ही नहीं है, पर ब्रह्मा बाबा ने साकार शरीर में होते अव्यक्त स्थिति ऐसी बनाई जो वह अव्यक्त स्थिति अभी भी काम कर रही है। यह जानने, मानने, अनुभव करने से हमारी भी ऐसी स्थिति अव्यक्त बन सकती है। जरा भी अभिमान तो छोड़ो, देहभान भी नहीं, जैसे ब्रह्मा बाबा को देह के भान से भी न्यारा देखा। परमात्मा ने अभी जो संस्कार बनाये हैं वो द्वापर के बाद भी अभिमान नहीं आया होगा। चेक करो, सभी ऐसा फॉलो फादर का फायदा उठा रहे हैं? सी फादर, फॉलो फादर।

बाबा जो सुबह को मुरली चलायेगा, सारे दिन में कोई शब्द गहराई में ले जाते तो वो अनुभव भूलता नहीं है क्योंकि शिवबाबा सर्व आत्माओं का पिता है, उसने नई दुनिया स्थापन करने के लिए ब्रह्मा बाबा का रथ ले लिया। रथ कहता है यह मेरा नहीं है उसका है, पर पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा ऐसा जरा भी व्यक्त भाव नहीं, आवाज से परे। तो अभी समय अनुसार बाप समान पुरुषार्थ करना चाहिए, यह अन्तिम घड़ियाँ हैं। ज्ञान में किसी को कितना, किसी को कितना समय हुआ है। पर पुरुषार्थ में, बाबा की दृष्टि में कितने साल के हो गये हो? ज्ञान दिल से सुनाना है, ऐसे नहीं सिर्फ लेक्चर करना है, दिल से सुनाने की जो अन्दर से भावना है, बाबा ने जो सुनाया है वही सुनाना है।

सारी दुनिया में, सारे कल्प में ऐसा सेवा का स्थान कोई भी नहीं है, जो सेवा बढ़े, भाग्य बनावें। तो भाग्य बनाने में तीन बातें हैं। पहले अन्दर से त्याग हो, त्याग के लिए वैराग्य चाहिए। वैराग्य भी शमशानी नहीं, कोई ऐसी बात आयी तो वैराग्य आया फिर कहाँ रग चली गयी, फिर वो त्याग नहीं कर सकता

है। त्याग वृत्ति से त्याग फिर कारोबार में है, लौकिक या ईश्वरीय परिवार में है, फिर अनासक्त वृत्ति है। जिसको बाबा कहते गृहस्थ में रहते हुए ट्रस्टी है। कोई भी चीज़ को अपना नहीं समझता है। शुरू में सेवायें जिस तरीके से हुई हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से सेवा करने वाले यहाँ रहने वालों से भी ज्यादा भाग्यवान हैं। समर्पण माना क्या? पढ़ाई में रेग्युलर, धारणा में नम्बरवन। कोई भी बात को मेरा नहीं समझे। बाबा देखता है बच्चे को अभिमान नहीं है, उपराम है। जैसे सारे विश्व की सेवा में शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को साथी बनाया। जब तक विनाश होगा तब तक दोनों (साकार निराकार) मिल करके, अव्यक्त हो करके सेवा कर रहे हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से जो सेवा हुई उसके लिए मान मिला, उसमें भी वृत्ति न जाये क्योंकि बाबा ने कराया है। कभी यह चिंतन नहीं कि मैंने किया या मुझे करना है। फ्री हैं। ऐसी स्थिति बनाने से पहले हम बाबा पर बलिहार हुए, अभी बाबा हमारे ऊपर बलिहार हुआ।

अभी भगवान का इतना प्यार देखा है और सबको करता है, कोई नहीं कहेगा मेरे को बाबा प्यार नहीं करता है। बाबा तो करता है लेकिन वो नहीं लेता तो बाबा क्या करे? बाबा प्यार दे रहा है, वो फिर थका हुआ है, मूँझा हुआ है, घबराया हुआ है, थोड़ा सा निराश हो जाता है तो बाबा क्या करे? तो बाबा का दोष नहीं है, कितना बाबा को याद करते हैं लेकिन नहीं याद आता है तो मैं क्या करूँ? कोई और बातें याद करेंगे तो बाबा कैसे याद आयेगा? बाबा अनकंडीशनल लव देता है परन्तु होशियार बहुत है, कंडीशन बहुत डालता है। जरा भी बुद्धि में हेराफेरी हुई तो बाबा के साथ का अनुभव नहीं हो सकता। साक्षी हो करके पार्ट प्ले करने का पाठ अव्यक्त बापदादा ने बहुत अच्छा पढ़ाया है। ड्रामा में जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है अच्छा, जो होगा सो अच्छा। यह बाबा ने हम बच्चों को सिखाया है फिर प्रैक्टिकली सब अच्छा हो जाता है। अच्छा।

दूसरा क्लास

"एकाग्रता की शक्ति एकता से आती है, एकाग्रता सब विघ्नों को समाप्त कर देती है" (दादी जानकी)

ओम् शान्ति। इस सीजन में मीठे बाबा ने जो हम सबको मीठी शिक्षायें दी हैं, उन सभी बातों को ध्यान पर रखकर बाबा ने कहा प्रॉमिस करो, प्रॉमिस क्या करें लेकिन संकल्प की दृढ़ता सफलता ले आती है। इतनी सेवायें हुई हैं, मैं साक्षी होके देखती हूँ, मैं वण्डर खाती हूँ कि बाबा ने क्या खेल रचाया है! साकार बाबा की मुरलियों में जो प्रेरणायें हैं वो सब प्रैक्टिकल हो रही हैं। नयी बात कुछ नहीं है।

मैं किस आधार से चल रही हूँ? साइलेन्स के आधार से। इकॉनामी, एकनामी, एकाग्रता की शक्ति, एकता में रहना है। एकता से रहने में थोड़ी भी डिफीकल्टी है तो एकाग्रता की शक्ति नहीं है। एकाग्रता की शक्ति में विघ्न शब्द भी नहीं आयेगा। अनेक कार्य बाबा ने किये हैं, कराये हैं। संकल्प की दृढ़ता है, होना जरूरी है तो हो जाता है।

इसमें तीन बातें बहुत काम करती हैं एक - जिसकी बात करें वो फेस पर न आये, इसका ध्यान रखा है। दूसरा - अगर अशरीरी बनने के अभ्यास की कमी है तो योग ठीक नहीं है। तीसरा - बाबा ने जो कहा वह हो जायेगा, अटल निश्चय है। एक बार बाबा को कहा बाबा मकान छोटा है, बोला बच्ची, बड़ा हो जायेगा। हो गया। इन तीन बातों ने मुझे हमेशा सेफ और साफ रखा है। माया की छाया नहीं पड़ती है। प्रभु की छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं। उस छत्रछाया में दूसरे भी आ जाते हैं। आजकल थोड़ा भी भाव स्वभाव का या तो है चक्कर या है टक्कर। किसी के चक्कर में आते हैं तो वही अच्छा लगता है, टक्कर में आते हैं तो अच्छा नहीं लगता है। इसमें समय संकल्प चला जाता है। ऐसी बातों को अभी समाप्त करेंगे। अभी हम छोटे बच्चे नहीं हैं, कभी भी कोई अपना विचार देंगे तो बाबा ने कभी भी ना नहीं की होगी। सेवा का संकल्प आया तो कहता है भले करो। हो जायेगा।

रिस्पेक्ट और रिगार्ड, इसका मतलब क्या है! अगर मेरे को रिस्पेक्ट देने का संस्कार पड़ा तो मुझे सब रिगार्ड देंगे। एक

बार मैंने किसी को रिस्पेक्ट नहीं दिया, तो लोग कहेंगे, ये तो हमेशा ही ऐसे करता है। जैसा हम करते हैं ऐसे ही सामने आता है, इसमें बड़ा खबरदार रहना है।

हर आत्मा का अपना पार्ट है। ड्रामा बना बनाया है। भगवान खुद कहता है मैं भी ड्रामा के वश हूँ। ड्रामा की नॉलेज को रिस्पेक्ट देते हैं। ड्रामा की नॉलेज है मेरी माँ, देने वाला है बाप, मैं कौन हूँ! ड्रामा सब बातों को ठण्डा कर देता है, बाबा शक्ति देता है। ड्रामा धीरज देता है, ऐसे माँ-बाप के बच्चे हैं हम। ऐसे चिन्तन में रहो और कोई बातों की चिन्ता फिकर नहीं हो।

सुबह शाम दिन रात सोते जागते स्वचिन्तन में रहना दवाई है। स्वचिन्तन, शुभ चिन्तन, श्रेष्ठ चिन्तन एकदम दवाई का काम करता है। शुभचिन्तन में अपनी स्थिति है, शुभचिन्तक रहने में सबकी दुआ है, सभी खुश हैं। दुनिया को प्रेम चाहिए, सच्चाई चाहिए। हमारा हर काम विश्वास से हुआ है। बाबा में विश्वास है, बाबा का हम बच्चों में विश्वास है। मैं तो कहेंगी बाबा की शक्ति से, उसमें भी काम बाबा का है, कभी यह नहीं सोचा होगा कि यह बड़े खर्चे वाला है। यह सब जो हुआ है किसकी कमाल है!

आपस में एकता, हम सब जैसे एक हैं। मेरी यह भावना है कि किसी को भी कोई देखे तो उसके अन्दर से निकले यह तो सब एक हैं। कोई बात है ही नहीं, बस मीठा बोलो।

जब वैल्यूज का प्रोजेक्ट शुरू हुआ तो उसमें कई सेवायें हुई हैं। अटेन्शन गया गुण और शक्तियाँ हमारे में हो। मेरी भावना है कि जो करना है अब कर लें, मुझे अपने लिए करना है, मैं पहले नहीं करेंगी तो मेरा आवाज निकलेगा ही नहीं, कि सब करें। निमित्त भाव में बहुत सुख है। अभी प्रैक्टिकल लाइफ में 6 वैल्युज़ जरूर चाहिए।

1) सत्यता, जैसे बाप सत्य है, नॉलेज सत्य है, कार्य भी सत धर्म की स्थापना का है। जो बाबा हम बच्चों द्वारा करा रहा है। प्रभू की लीला चल रही है। पैसा कहाँ से आया? सभी ने अपना भाग्य बनाया। जो सूर्यवंशी में आने वाले होंगे वो सब समर्पित करेंगे, वो ऐसे नहीं कहेंगे कि मैं गरीब हूँ।

2) पवित्रता, मैं हाथ जोड़के कहती हूँ कि अपने संकल्प की क्वालिटी को ऊंचा बनाओ। अपने संकल्प हमेशा ठीक रखो। बड़ी राजाई है एक भी एक्स्ट्रा संकल्प न हो। जो काम का संकल्प नहीं है वह आ नहीं सकता। सारा पुरुषार्थ, सेवा, चारों सब्जेक्ट में फुल पास होना हो तो संकल्प बड़ा शुद्ध शान्त श्रेष्ठ दृढ़ हो - यह है पवित्रता। जैसे मेरा बाबा त्यागी, तपस्वी, सेवाधारी होकर रहा है। ऐसे सी फादर।

3) धैर्यता, थोड़ा भी अधैर्य होने से मूड चेन्ज हो जाती है। बाबा कहते अपनी मूड चेंज नहीं करो। जल्दी कोई जवाब दे दिया, तो आटोमेटिकली कैच कर लेते हैं। बोलने की जरूरत नहीं है।

4) नम्रता है तो निमित्त भाव है। ऐसा लोगों को अनुभव हो। कैसा भी अहंकार हो, उसे छोड़ना है, हम ऐसा करें। फलाना ऐसा करता है, अंगुली उठाई तो खत्म - मुझे क्या करना है!

5) फिर है गम्भीरता। गम्भीरता में भी शान है, कभी भी बाबा ने किसी की बात को रिपीट नहीं किया होगा, समा लिया। अच्छी दृष्टि से बाबा देखता है। 6) फिर आती है मधुरता।

बाबा की यह बातें प्रैक्टिकली अपने में आ जायें तो दूसरों में अपने आप आ जायेंगी। बाकी बाबा को प्रत्यक्ष करने की सेवायें तो हुई हैं। मैं जो कर रहीं हूँ, बाबा को फॉलो कर रही हूँ, अभिमान के वश तो नहीं है! मैं समझती हूँ अटेन्शन रखने से सेवा में सफलता हुई पड़ी है। परन्तु सच्चाई से विधिपूर्वक पुरुषार्थ करने से जो सफलता मिलती है उसमें बाबा और ताकत देता है।

बाबा के बच्चे हैं, बाबा बच्चों को शक्ति देकर चला रहा है। एक है बल, दूसरा है शक्ति, तीसरा है एनर्जी। निर्बल को बल चाहिए, संगठन में चलने के लिए शक्ति चाहिए। उसमें फिर आठ शक्तियां काम करें। हमारे में कोई कमजोरी न रहे। एक भी शक्ति ऐसी न हो जो समय पर हाज़िर न हो, उनसे एनर्जी बनती है। टाइम, मनी, एनर्जी जरा भी वेस्ट न जाये, फिर बाबा का अनुभव करके देखो, पर्सनल कोई कमजोरी न हो जिसका पश्चाताप करना पड़े, कोई कहे तुम भी ऐसे करती हो..। कांध नीचे नहीं करना पड़े। योगी का चेहरा, सदा सहयोगी होगा। जहाँ कदम रखो सहयोग मिलता है, सहयोगी बन जाते हैं। सारा यज्ञ स्थापना का कार्य योग सहयोग, सच्चाई, सफाई और सरलता से हुआ है। बाकी क्या करने का है।

बाप हम बच्चों को गिफ्ट में लिफ्ट देता है। एक सेकण्ड में ऊपर जाओ, बटन दबाने की जरूरत नहीं है। लिफ्ट में बैठो, चढ़ना उतरना नहीं पड़ता है। कई बातें कहने की जरूरत नहीं है, आवाज से परे जाओ बाबा भी खुश मैं भी खुश। अच्छा।

24-5-15

"हम सभी कितने भाग्यवान हैं, जो भगवान को हम पसन्द आ गये, उसे अपने दिल में बिठा लिया"

(दिल्ली पाण्डव भवन में दादी गुल्जार जी का क्लास)

सभी उस रस में बैठे हैं, आत्मा और परमात्मा का मिलन कितना रूहानी स्नेह का अनुभव कराता है। हर एक बहुत अच्छा चांस ले सकते हैं। रूबरू बाबा का मिलना, यह भाग्य कम नहीं है। मिलने के बाद भी यह दृश्य भूलता नहीं है। भले साकार रूप में तो शक्ल सामने आयी और चली जाती है। लेकिन हमारे दिल में क्या होता है! खाते पीते सामने बाबा ही रहता है। जैसे बाबा के साथ खा रहे हैं, हरेक काम में बाबा के साथ का अनुभव होता है। दिल में हर सेकेण्ड बाबा ही सामने है। और यह भाग्य आप लोगों को अच्छा मिलता है, तो लकी तो हो। यह भी एक ड्रामा में आप लोगों का विशेष भाग्य है।जो भी हैं आप सबके सामने तो बाबा ही बाबा है, हमारे सामने भी बाबा ही है। दिल में तो होता ही है क्योंकि हिसाब के अनुसार तो 5 हजार वर्ष के बाद मिलते हैं। तो 5 हजार वर्ष कितना लम्बा समय है! और यह वर्ष (संगम के) जो हैं वो कितने भाग्यवान हैं! जैसे भागवत बैठके पढ़ो तो क्या लगता है! बहुत भाग्यवान आत्मायें हैं। हम ही हैं वह, खुशी तो तभी होती है जब समझ में आता है मैं ही होंगी। और भाग्य देखो मिला किसको है? साधारण, कोई ज्यादा पढ़े लिखे हैं, उन्हों को यह भाग्य नहीं मिला। लेकिन हम लोगों को बाबा पसंद आ गया और बाबा को भी हम पसंद आ गये। हम लोग भी भाग्यवान हैं जो बाबा ने पसंद कर लिया है। दिल पसंद क्या किया, दिल का ही बन गया। अभी दिल से निकल नहीं सकता है ना। (नहीं निकल सकता है) जितना समय दिल में आने में टाइम लगता है, निकलने में उससे भी ज्यादा... भूलना बहुत मुश्किल है। दिल खुश! दिल में ऐसे समा गया है जो निकलना बहुत मुश्किल है। हर एक के दिल से क्या निकलता है? मेरा बाबा, ''मेरा''। और लगता भी है मेरा ही है। तो मेरा बाबा है, यह खुशी कोई कम नहीं है। सभी खुश रहते हैं ना? ड्रामा अनुसार आप लोगों को यह स्थान मिला है, यह भी कितना भाग्य है! यहाँ तो सब दादी से मिलने जरुर आयेंगे ना, तो हम से भी मिलते हैं, आप सबसे भी मिलते हैं, तो देखो, अपना भाग्य! वाह मेरा भाग्य!

बहिनों को देख करके भाइयों को क्या लगता है? क्या बहनों को ज्यादा भाग्य मिलता है? या दोनों को समान मिला है? जो भी यह समय मिला है, उसे कैसे यूज़ करना है, उसका प्लैन बनाओ। (बाबा की याद में ही यह समय बीते) लेकिन जो बिना याद के टाइम जाता है, उसके लिए भी दिल में आता है ना! अपने को उस समय कितना श्रेष्ठ समझते हैं। सारे वर्ल्ड में भाग्यवान कौन? (हम बच्चे) उस हिसाब से देखो तो कितना बड़ा भाग्य है! और मिला कैसे साधारण! ऐसे नहीं लगता है यह बाबा मेरे को मिला है, यह तो मिलना ही था, यह हमारा भाग्य था, है और होगा। कल्प पहले वाला भाग्य, मेहनत नहीं लेगा निशानी है। और भाग्य में नहीं होगा तो आके भी पहचान नहीं सकेगा। तो दिल बोले - ''मेरा बाबा'' और जिस समय दिल से निकलता है ''मेरा बाबा'' उस समय का अनुभव देखो क्या है? अभी भी उसी समय का अनुभव सोचो, तो दिल में कितना आता है वाह! बाबा को हम ही पसंद आ गये! इतनी सारी दुनिया है, कितनी विशेषतायें हैं लेकिन बाबा को मैं ही पसंद आयी, तो कितनी खुशी होती है। चलो कैसे भी हैं, बीमार हैं, कम पढ़े लिखे हैं, क्या भी हैं लेकिन बाबा को तो पसंद आ गये ना, और क्या चाहिए? बाबा मिल गया, सब मिल गया। और वह फिर दिल में बैठ गया, पक्का बिठा दिया है ना! हरेक ने दिल में पक्का बिठा लिया, मेरा है तो ''मेरा'' कैसे भूलेगा!

तो हम देख रहे हैं कई नये नये बाबा के बच्चे एड हुए हैं, तो बहुत खुशी होती है। (सभा में पहली बारी दादी जी को देखने मिलने वाले, बाबा के नये बच्चे भी बैठे हैं) अभी सब अमर भव का वरदान ले लो क्योंकि परमात्मा का बनना, उसमें कुछ तो पेपर आयेगा ना! नहीं तो सारी दुनिया आ जाती। तो पेपर तो आयेंगे। कई बार पेपर में पेपर आते हैं, घबराना नहीं। बाबा को साथी बना लेना। अच्छा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"निश्चयबुद्धि बन हर सबजेक्ट में विजयी बनो"

निश्चय बुद्धि है तो सदा विजयी हैं। यह नहीं कि एक सबजेक्ट में विजयी बनो तो दूसरी सबजेक्ट में फेल रहो, उनको कोई पास मार्क्स नहीं मिलेंगी। उस कॉलेज में भी जो सब सबजेक्ट में मार्क्स फुल लेता वही पास होता है। तो हमारी भी जो सबजेक्ट्स हैं - वह हैं ही मन्सा, वाचा, कर्मणा.. भल लौकिक में कई जवाबदारियाँ हों, परन्तु जब पक्का निश्चय किया मैं बाबा का, बाबा मेरा। तो अगर एक भी कोई राँग कर्म होता, भूल होती तो पत (इज्जत) किसकी गँवाते? बाबा की। अरे! यह कहते हम तो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी हैं लेकिन देखो इनकी चाल, यह देखो इनकी रिपोर्ट...। तो किसकी इज्जत गई? बापदादा की। तो आप सभी बाबा के बच्चे बैठे हो, अगर हम पूछें निश्चय बुद्धि हो तो सब हाथ उठायेंगे। अगर पूछे संशय बुद्धि हो तो एक भी हाथ नहीं उठायेगा। तो निश्चय बुद्धि माना विजयी। विजयी माना अपनी स्थिति बाप समान बनाना। बाप समान स्थिति माना ही हम बाबा के समान निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी हैं। कभी आपने सुना कि बाबा कहे मेरे पास आज यह माया आई, .. वह तो बाबा बच्चों की दिल लेते कहते बच्चे जो तूफान तुम्हारे पास आते वह पहले बाबा के पास आते। हम कहते थे बाबा आपको कौनसा तूफान आया, जरा बताओ... तो मुस्कराते थे। कोई तूफान नहीं। तो हम बच्चे जब बाबा के पक्के निश्चय वाले हैं तो यह कभी भी नहीं कहें कि हमारे पास माया आई और माया ने हमारे पर विजय पाई और हमसे कोई-न-कोई विकर्म कराया। तो फिर बाबा की जो आज्ञा है निर्विकारी बनो, निरंहकारी बनो वह तो नहीं हुए। अगर हमें निराकारी, निर्विकारी रहना है तो सूक्ष्म संकल्प में भी माया नहीं आवे अर्थात् कोई भी अपवित्र कर्म न हो। अपवित्र कर्म हैं, कुछ भी है तो जरुर बुद्धि में संकल्प विकल्प होंगे। अगर संकल्प विकल्प चलते तो फिर वह दूसरों की भी ऐसी व्यर्थ स्थिति बनाने के निमित्त बनते।

तो हम सभी को पुरुषार्थ करना है, कल अगर मेरा शरीर छूटे तो क्या मैं बाप समान बनी हूँ? बाप समान अर्थात् विजयी, बाप समान माना सिर्फ यह नहीं पुरुषार्थी हूँ, नहीं। अगर यही करते रहे तो समर्पण नहीं हुए। अगर यही स्थिति है तो बाबा बाबा कहने के भी अधिकारी नहीं हैं। तो हमें यह सूक्ष्म चेकिंग करनी है, निराकारी स्थिति बनाके व्यर्थ संकल्पों को भी खत्म करना है, तब कहा जाता है कि यह विजयी है। न व्यर्थ संकल्प हो, न व्यर्थ वाचा हो, न व्यर्थ समय जाये। रोज़ अपनी दिनचर्या में देखो कि आज सवेरे-सवेरे अमृतवेले ऐसी पॉवर भरी जो वह पॉवर हमारी सारा दिन हमें अनेक कार्य में मदद करे इसलिए अमृतवेले योग में बैठ बाबा से रूहरिहान करनी है, प्रेरणा वा शक्ति लेनी है। और फिर इस निराकारी स्थिति में रहने की दिन भर में बार-बार मेहनत करनी है। हर घण्टे सूक्ष्म अपना चार्ट देखना है।

तो कहने का भाव है कि हम सब अपनी स्थिति बाप समान बनायें। हमारे सामने चेकिंग करने लिए बहुत बड़ा साधन है कि सदा बाबा को देखो। सी फादर। भल बाबा साकार में नहीं है परन्तु आकारी अव्यक्त रूप में तो बाबा सदा हमारे सामने है। जब बाबा सामने है माना फरिश्ता स्थिति सामने है। जब फरिश्ता स्थिति सामने है तो स्वयं फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ, फरिश्ता हूँ...। जब फरिश्ता भव रहेंगे तो दूसरों को भी ऐसी फरिश्ते भव की स्थिति की प्रेरणा देंगे। यही संगम की महान घडियाँ हैं, ऊंचे-ते-ऊंचा पुरुषार्थ करना है जो मुझे देख अनेकों को प्रेरणा मिले और जब प्रेरणा मिलेगी तो रिटर्न में हमें दुआयें मिलेंगी। दुआयें मिलती हैं हमारी स्थिति को देखकर।

तो हम हमेशा अमृतवेले से रात तक देखती हूँ कि हर एक के मन, वचन, कर्म से हमें ऐसा फरिश्ता बनने की दुआयें मिलती हैं! इसके लिए हमारी दृष्टि, वृत्ति भी इतनी सम्पन्न बनें जो कल शरीर छूटे तो यह नहीं कि अरे! सम्पन्न तो बने नहीं। परन्तु स्थिति ऐसी हो जैसेकि हम आज भी बाप समान बने हैं और बाप समान बनने से अनेकों को स्वत: ही प्रेरणा मिलती रहती है। बाबा सदैव कहते बच्चे कर्म ऐसे करो जो तुम्हें देख इन लाखों को प्रेरणा मिले। तो आप अपने को गृहस्थी नहीं कहो, ऐसे नहीं कि हम तो प्रवृत्ति वाले हैं, बाबा कहा माना गृहस्थीपना पूरा हुआ। ''मेरा बाबा'' माना समर्पण। नहीं तो मेरा बाबा नहीं। बाबा किसका है? ऐसे तो सभी का कहेंगे लेकिन प्रैक्टिकल में क्या है? तो मेरा बाबा कहना माना आप सभी बाबा को समर्पण हो गये और समर्पण बच्चे निमित्त हैं एक से अनेकों के लिए। और अनेक हमारे को देख कॉपी करेंगे जब हम अपनी स्थिति निराकारी, नष्टोमोहा बनायेंगे। अगर नष्टोमोहा नहीं तो समर्पण नहीं। नष्टोमोहा नहीं तो प्रभु प्रिय भी नहीं हैं। प्रभु प्रिय बनना है तो सदा मेरा बाबा, मेरा बाबा रटो। और मेरा बाबा माना ही दूसरा न कोई। जब दूसरा न कोई तो नष्टोमोहा हैं ही। जो नष्टोमोहा नहीं उनको दूसरे पोते-धोते आदि हैं। इसलिए बाबा कहते तन, मन, धन सब बाबा तेरा, मेरा नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।